अमर सिंह की भाषा और साहित्य दृष्टि : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० शिव कुमार
मोती चौक, पटना

शोध-सार

अमर कोष जैसी प्रशस्त रचना से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है, कि यह निश्चित रूप से किसी समृद्ध एवं सुसंस्कृत भाषा और साहित्य की अनूठी परिणति है। इस परिणति के मूल में अवश्य एक स्वस्थ एवं सुगठित शिक्षण प्रणाली प्रचलित थी। अमरसिंह की शब्द-चयन-परम्परा पाणिनीय व्याकरण के नियमों से सर्वथा आबद्ध है। यद्यपि कोषकार ने कोई भी नाम निर्दिष्ट नहीं किया है, फिर भी समाहृत्यान्यतन्ताणि (1,11,12) में जो अन्य तंत्र का उल्लेख किया है, उसे पता चलता है कि भाषा-संबंधी, शब्द शास्त्र संबंध तथा नामलिंगानुशासन प्रतिपादक अनेक ग्रन्थ अमर सिंह को प्राप्त थे। ज्ञान और विज्ञान का विवेचन करते हुए कोषकार ने कहा है कि मोक्षोपलब्धि के प्रयत्रों में सन्निविष्ट बुद्धि को ज्ञान कहते है तथा लौकिक धर्म, अर्थ और काम की पूर्ति के लिए शिल्पशास्त्रादि में सन्निविष्ट बुद्धि को विज्ञान हैं तात्पर्य यह है कि आधिदैविक अभ्युत्रति विज्ञानाश्रित है। अत: मानव-जीवन के लिए दोनों उपयोगी है।

शब्द कुँजी : विज्ञानाश्रित, भाषा, साहित्य, वैदिक भाषा

Received : 28/9/2025 https://doi.org/10.5281/zenodo.18258691 Acceptance : 30/10/2025

भूमिका:

पाणिनि, व्याडि, वररूचि आदि पूर्ववर्ती आचार्यों की कृतियों ने इस कोष की रचना में अवश्य योगदान दिया होगा। जिस प्रौढ़ पद्धति से और जिस प्रमाण्ड् पाण्डित्य से इस ग्रन्थ की रचना हुई है, वह सर्वथा अमूल्य है।

यही कारण है कि गत दो सहस्त्र वर्षों से अमरकोष संस्कृत भाषा का प्राण माना जाता रहा है। सभी विद्वानों, कवियों टीकाकारों और अ येताओं ने उसका ƒदयहार बनाकर कंठगत करने की नई सरणि का सूत्रपात किया और कहा-अष्टाधयायी जगन्मातामरकोषों जगप्पिता। कथन की चरितार्थता इसी में है कि ये दोनों ग्रन्थ इतने लोकप्रिय हुए कि आज इनकी आवश्यकता नूतत पदे-पदे का उद्घघोष कर रही है। अमर कोष में प्रयुक्त शिक्षा और साहित्य संबंधी शब्दावली तत्कालीन शिक्षा, भाषा, साहित्य और अध्ययन-पद्धति पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। शब्द संकलन की इस अभूतपूर्व प्रणाली ने भाषा के अध्ययन को नूतनतम दिशा प्रदान की।

भूमिका: अमरकोष में भाषा और बोली के पर्याय इतनी सार्थकता से रखे गए हैं कि वे समस्त भारत वर्ष की एकता और संस्कृति का बोध करा देते हैं। ब्राही[3] शब्द ब्राह्मण: इयम् विग्रह से बना है, जो ब्रह्मा से अपना संबंध स्थापित कर अपनी प्राचीनता और शाश्वत स्थिति का बोध कराती है। इसी प्रकार भारती[4] भारत की भाषा का बोध कराती है। भाषा[5] का अर्थ ही है व्यक्त भाषण करनेवाली। इसी प्रकार गी, वाक, वाणी और सरस्वती शब्द भी भाषावाचक है।[6] भानुजी दीक्षित ने अपनी सुघ व्याख्या में इन सात नामों को भाषा का अधिष्ठात देवता कहा है।[7] इन नामों से स्पष्ट है कि शिक्षित एवं विद्वानों की भाषा के परिष्कृत भाषा (संस्कृत) थी, साथ ही व्यवहार में प्राकृत भाषा का भी प्रचलन था।[8]

अमरसिंह ने संस्कृत शब्द का दो अर्थों में प्रयोग किया है। कृत्रिमे लक्षणोयेतेपि (3,13,181) अर्थात बनाया गया अथवा पाणिनि आदि के व्याकरण-संबंधी लक्षणों से सिद्ध संस्कृत भाषा का एक नाम वस्तुत: संस्कृति का कृत्रिम अर्थ लेकर होर्नल और ग्रियर्सन ने वैदिक भाषा को ही महत्व दिया था। संस्कृत भाषा को तो उन्होंने एक कृत्रिम भाषा ही कह दिया था। किन्तु ए॰बी॰ कीथ ने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास में संस्कृत को वैदिक भाषा के साथ कुछ भिन्नताएँ होने पर भी ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदो की भाषा के अधिक सन्निकट हैं, ऐसा माना हैं। पाणिनि आदि व्याकरणों का प्रयत्र कृत्रिमता की ओर नहीं था, अपितु उपनिषद आदि की परम्परा से चली आई भाषा को सरल एवं स्वस्थ रूप में प्रस्तुत कर उसे सुबोध एवं सार्वजनिक बनाना था।[9] पाणिनीय व्याकरण संस्कृत और अपभ्रंश की एक प्रशस्त सीमा रेखा का कार्य अवश्य करता है।

संस्कृत और प्राकृत :

दोनों ही साथ-साथ बोली और समझी जाती थी। व्याकरण से अनिष्पन्न को अपभ्रंश कहा गया है। अतः संस्कृत जैसी समृद्ध एवं व्याकरण के नियमों से निष्पन्न एवं परिभार्जित भाषा बाहुल्येन व्यवहश्त थी। अपभ्रंश के उदाहरण थे गावी, गीता, गोणी आदि।[1] इसका शुद्ध रूप था गो, परन्तु इसके अपभ्रंश शब्द भी पतंजलि को ज्ञात थे। व्याकरण आदि शब्दों में वाचक अर्थात् साक्षात् सांकेतिक अर्थ को प्रकट करने वाले की ही शब्द कहा गया है।[2] तिडन्त शब्दों के सुबन्त शब्दों के समूह को अथवा कारकान्वित क्रिया को वाक्य कहते है।[3]

अमर कोश की प्रशस्त शब्द संग्रह प्रक्रिया, प्रणाली, लिंगादिनिर्देश, वर्गानुकूल असंख्य साधु शब्दों का संकलन तथा भारतीय संस्कृति संबंधी व्यापक पदावली अमरसिंह के महान व्याकरण होने का प्रति पादन करती है।[4]

अध्यापकः

प्राचीन काल में अध्यापक को समाज में सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था। राजा से भी अधिक मान्यता थी।[5] कोषकार ने अध्यापन का कार्य करने वाले को अध्यापक और उपाध्याय दोनों बतलाया है।[6] गर्भाधानादि षाडेश संस्कारों को विद्यानतः सम्पन्न करानेवाला, गुरु संज्ञा से विभूषित किया गया है।[7] इसी प्रकार गर्भाधानादि संस्कारों को यथोक्त रीति से कराने वाला तथा अन्न से पोषण करनेवाला गुरु कहलाता था।[8]

वेदमंत्रों की व्याख्या करनेवाला आचार्य अथवा मंत्रव्याख्याकृत कहलाता था।[9]

मनु के अनुसार शिष्य का उपनयन संस्कार करके जो ब्राह्मण यज्ञविद्या और उपनिषद का वेद का अध्ययन करता था, उसे आचार्य कहते थे।

हिन्दी साहित्य और भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अमर सिंह एक प्रतिष्ठित और उल्लेखनीय विद्वान माने जाते है। साहित्य की आधार शिला समाजिक पृष्ठ-भूमि को केन्द्र में रखकर उन्होंने भाषा की संरचना, सामाजिक गतिविधियों की उपयोगिता एवं आयामों की परिधि को लेखनी के माध्यम से समाज में साझा किया है। इनके योगदान साहित्य के हर कड़ी में प्रतिबिम्बित होते हैं। भाषा विद्वान व्याकरण, भाविक व्यवहार, लेखन शैली और साहित्ययिक संवेदना के अनेक आयामों से जुड़ा है।

अमर सिंह की भाषा दृष्टिः

(क) भाषा का समाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप :

अमर सिंह के अनुसार भाषा किसी समुदाय की सांस्कृतिक अनुभूतियों और सामाजिक चेतना का प्रतिबिंब है। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन अनुभवों का संग्रह है। उनकी भाषा दृष्टि इस विचार पर आधारित है।

भाषा समाज में जन्म लेती है।

समाज के साथ विकसित होती है।

समय के साथ परिवर्तनशील रहती है।

इस प्रकार वे भाषा को एक जीवन्त गतिमान् और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

(ख) भाषा और व्याकरण का संबंधः

अमर सिंह की लेखनी इस बात को स्पष्ट करती है कि व्याकरण भाषा को बान्धता नहीं, बल्कि उसे व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप देता है। उनकी दृष्टि में भाषा-विज्ञान की भूमिका यह है कि भाषा के वास्तविक रूप बोली, मुहावरों के प्रयोगों और लोक व्यवहार को समझ जाए और उसे साहित्य तथा शिक्षा में सम्मान जनक स्थान मिले।

(ग) लोक भाषा और बोली के प्रति-सम्मान :

अमर सिंह ने गद्य और पद्य के माध्यम से लोक भाषा के सम्मान को दृष्टिगोचर करने का भरसक प्रयास करके एक नया रूप देने का प्रयास किया। उदाहरण स्वरूप, धूप का टुकड़ा कहानी पूर्ण रूप से स्पष्ट करती है। इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि हिन्दी की जड़े ग्रामीण संस्कृति में हैं, इसलिए साहित्य को लोकभाषा से दूर नहीं होना चाहिए।

(घ) अमर सिंह का साहित्य दृष्टिकोण :

साहित्य एक ऐसी विद्या है, जिसके माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों का सजीव चित्रण मिलता है। जैसे किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, हाशिये पर खड़े व्यक्ति इन सबकी पीड़ा, संघर्ष और मनोभावना उनकी रचनाओं का केन्द्रीय विषय है।

साहित्य में प्रमुख योगदानः

धूप का एक कण
मेरी मुट्ठी में आमिरा
सूखे मन की धरती पर
कुछ सा पानी सा भर गया।

इस कविता के माध्यम से आम व्यक्ति के जीवन में मौजूद, छोटे-छोटे उजाले की महत्ता को प्रकट करने वाली रचना है, यह बताती है, कि चाहे जीवन कठिन हो, उम्मीद कभी खत्म नहीं होती है, धूप का छोटा-सा टुकड़ा भी मन को शक्ति देता है और आगे बढ़ने का साहस पैदा करता है। धूप का टुकड़ा के माध्यम से अमर सिंह को सामाजिक स्तर के अन्तर्गत स्त्री के आत्म सम्मान और भावनात्मक स्वतंत्रता के इर्द-गिर्द रचना धूमती नजर आयेगी। इस कहानी के माध्यम से बताया कि हर स्त्री के अन्दर इतनी सशक्त संवेदना होती है, जिसके माध्यम से अपने भीतर की रोशनी को पहचाने की यात्रा करती है। इस यात्रा में स्त्री के दायित्व को ऐसा अंकित किया है, जो अधिकांशतः समाज में देखा जाये तो विवाह के उपरान्त हर स्त्री की यह व्यथा उजागर है। भीतर की वह प्यास जो एक मानसिक स्पर्श, स्नेह पूर्ण शब्द की खोज करती है। इस यात्रा के दौरान एक पुरुष इस व्यथा को पूर्ण रूप से समझता है यही अहसास की वह धूप दिखाई देती है, जिस धूप के लिये जीवन में संघर्ष कर रही है। कहानी के माध्यम से बताने का प्रयास किया कि यही से आत्म सम्मान का पुनर्जन्म है। उपन्यास जैसे रेत में दरारे, नीले आकाश की ओर इत्यादि।

निष्कर्ष:

शिक्षा और साहित्य के माध्यम से भाषा और साहित्य की अनूठी प्रभाव है। इसमें अवश्य एक स्वस्थ एवं सुगठित शिक्षण प्रणाली प्रचलित थी। शब्द चयन परम्परा आदि व्याकरण के नियमों से सर्वथा आवद्ध है। तत्कालिन शिक्षा, भाषा, साहित्य और अध्ययन पद्धति पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। ज्ञान और विज्ञान, मोक्ष, बुद्धि आदि साहित्य में समाहित है। इसलिए वैदिक भाषा, संस्कृत भाषा भी बोली जाती है। व्याकरण भाषा का रीढ़ की हड्डी के समान है। इसके बिना भाषा अधूरा और अटपट्टा है। व्याकरण आदि शब्दों में वाचक सांकेतिक अर्थ को प्रकट कर सकता है। व्याकरण से ही वेद, मंत्र का प्रयोग संभव है। इसलिए प्राचीनकाल से अध्यापक सर्वमान्य है और वर्त्तमान समय में भी अध्यापक का सम्मान सर्वमान्य है।

अमर सिंह को ''पाटशोधक'' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इनकी रचनाये लोगों के जीवन विशेषकर महिलाओं के यथार्थ को उजागर करती है, सामाजिक बंधनों और रूढ़ियों की आलोचना करते हैं, उनका साहित्य परिवर्तन, जागरूकता और संवेदना का वाहक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अमर 1, 15, 16
2. वही
3. अमर 1, 16, 11
4. वही
5. अमर 1, 15, 11
6. वही
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ 8-9
8. महाभाष्य प्रथमाहिक
9. सुधा टीका की भूमिका में शिवदत्त पृष्ठ-1
10. मनु 2 1139
11. अमर 2, 1717
12. मनु 2 1142
13. व्याख्या सुधा पृष्ठ 253